दासी बनूं तिहारी ...

श्रीस्वामिनीजू मैं तो दासी बनूं तिहारी,
दासी बनूं तिहारी, दासी बनूं तिहारी ।।

मंगलमयी भवन की करती रहूँ टहल मैं,
ऐसी ही किरपा कीजे, वृषभानु की दुलारी ।। दासी ...

प्रीतम प्रिया की जोरी, इक श्याम एक गोरी,
मन में बसी है मोरी, जाऊँ मैं वारि-वारी ।। दासी ...

प्रेमी हृदय से हरदम, सुमिरन करूँ तिहारा,
घुंघरू पहन के पग में, नाचूँ मैं दै-दै तारी ।। दासी ...

http://www.govindbhargav.in